कैंपस प्रभात

निबंध प्रतियोगिता में रश्मि, भाषण में प्रेम एवं वाद-विवाद में आलोक आया अव्वल | सिंहवाड़ा के विद्यार्थी को यूपीएससी में मिला 59वां रैं

मिथिला की दशा-दिशा संग वैश्विक समस्याओं पर केंद्रित रचनाओं पर किया विमर्श

साहित्य अकादमी के कार्यक्रम से युवा पीढ़ी को कराया गया मिथिला की संस्कृति से परिचय

मैथिली कवि सम्मेलन

प्रतिनिधि, बिरौल

जनता कोशी कॉलेज, बिरौल परिसर में साहित्य अकादेमी नई दिल्ली के सौजन्य से आयोजित मैथिली कवि सम्मेलन का उद्घाटन कॉलेज के प्रधानाचार्य सूर्यनारायण मांझी, मैथिली साहित्यकार नीता झा व ज्योति भास्कर ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया. साहित्य अकादेमी व जेके कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में कॉलेज सभागार भवन में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान कॉलेज के प्रधानाचार्य ने कहा कि यह गौरव की बात है कि पहली बार इस कॉलेज में मैथिली के संवर्धन व संरक्षण के लिए कार्यक्रम का आयोजन हुआ है. उन्होंने दूर-दूर से आये कवियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि इससे मिटती जा रही मिथिला की पहचान को मजबूती मिलेगी. साथ ही मैथिली के प्रति जागरूकता के लिए यह ठोस पहल साबित होगा.

इस अवसर पर मैथिली कवि ज्योति भास्कर ने मिट्टी, पानी और प्रकृति पर बोलते हुए कहा कि बिना मिट्टी-पानी व प्रकृति से पूरे सृष्टि का मानव जीवन चल रहा है. प्रकृति के साथ छेड़छाड़ होने पर पृथ्वी कभी भी विलुप्त हो सकती है. मैथिली कवि अब्दुल कादिर सक्की ने मिथिला धाम पर चर्चा करते हुए कहा कि माथा के चंदन, कुर्ता-धमाड़ी, खेत-खलिहान, गेहूं-धान और आम के चटनी से ही मिथिला धाम की पहचान है. उन्होंने कहा कि यहां की मछली, पान, मखान और मधुर बोल की हर जगह चर्चा होती है. संचालन करते हुए किसलय कृष्ण ने कहा कि यह मैथिली का कार्यक्रम हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने व अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास है. मौके पर नीरजी, कामिनी, ज्योति मिश्र, सुशांत सिंह, मेनका मल्लिक, दिलीप कुमार झा, दीपक मंडल, नटवर चौधरी आदि ने भी अपनी रचनाएं पढ़ीं.

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते प्रधानाचार्य, साहित्यकार नीता झा व अन्य.

कवि सम्मेलन के दौरान पुस्तक का विमोचन करते अतिथि.

दो सत्रों में कवियों ने किया अपनी रचनाओं का पाठ

बिरौल. साहित्य अकादेमी नई दिल्ली व जनता कोशी महाविद्यालय बिरौल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित मैथिली कवि सम्मेलन के पहले सत्र की अध्यक्षता शशिकांत मिश्र शशि ने की. इसमें दिलीप कुमार झा, कुमार राहुल, सुशांत सिंह, भास्कर ज्योति, अब्दुल कादिर सक्की ने काव्यपाठ किया. दूसरे सत्र की अध्यक्षता सुरेन्द्र पाठक ने की. इसमें मेनका मल्लिक, कामिनी अभिलाषा, नीरजी झा, ज्योति मिश्र ने कविताएं प्रस्तुत की. इस अवसर पर राजकुमार की लोकार्पण पुस्तक केदारनाथ चौधरी की कृतियों का दिग्दर्शन का विमोचन डॉ नीता झा ने अतिथियों के साथ किया. संचालन किसलय कुमार कृष्ण व धन्यवाद ज्ञापन राम शोभ पंडित ने किया. कार्यक्रम में डॉ बिंदुनाथ झा, डॉ शंभु पासवान, डॉ शिव कुमार, डॉ दिलीप, डॉ नरेश, डॉ विनय, डॉ भावेश, अरविंद करीम, डॉ संध्या रानी, डॉ राधा कुमारी, डॉ अजय, डॉ अखिलेश, डॉ संजय, कांति चौधरी, दीपक निराला, संजीव आचार्य, किसलय विक्रम, सदरे आलम, अकबर, सुमन यादव, नारायण, अभिलाषा आदि शामिल थे.

मैथिली भाषा आ संस्कृति केर विकास आ सम्मान हमर सबहक दायित्व

हमर मातृभाषा मैथिली हमर परिचय अछि. एहि भाषा से हम अपन भावना प्रकट करैत छी. मैथिली संस्कृति आ सभ्यता केर मूल आधार अछि. स्थानीय भाषा के संरक्षण हमर कर्तव्य अछि.

-रेखा कुमारी

मैथिली हमर जीवन केर अभिन्न हिस्सा अछि. ई भाषा मे अपनत्व आ आत्मीयता भेटैत अछि. स्थानीय भाषा सं लोकक जुड़ाव बनल रहैत छै. एहि लेल मैथिली के बढ़ावा अति आवश्यक अछि.

-कंचन कुमारी

हमर भाषा हमर अस्मिता अछि. मैथिली ओकर शान छै. स्थानीय बोली सं मान-सम्मान मे अपन मेलजोल बनल रहैत छै. मैथिली भाषाक माध्यम सं हम अपन इतिहासके जानैत छी. ई भाषाक विकास आ सम्मान हमर सबहक दायित्व अछि.

-मालती कुमारी

साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम से छात्राएं हुई उत्साहित